आपातकाल में सृजन फुलवारी

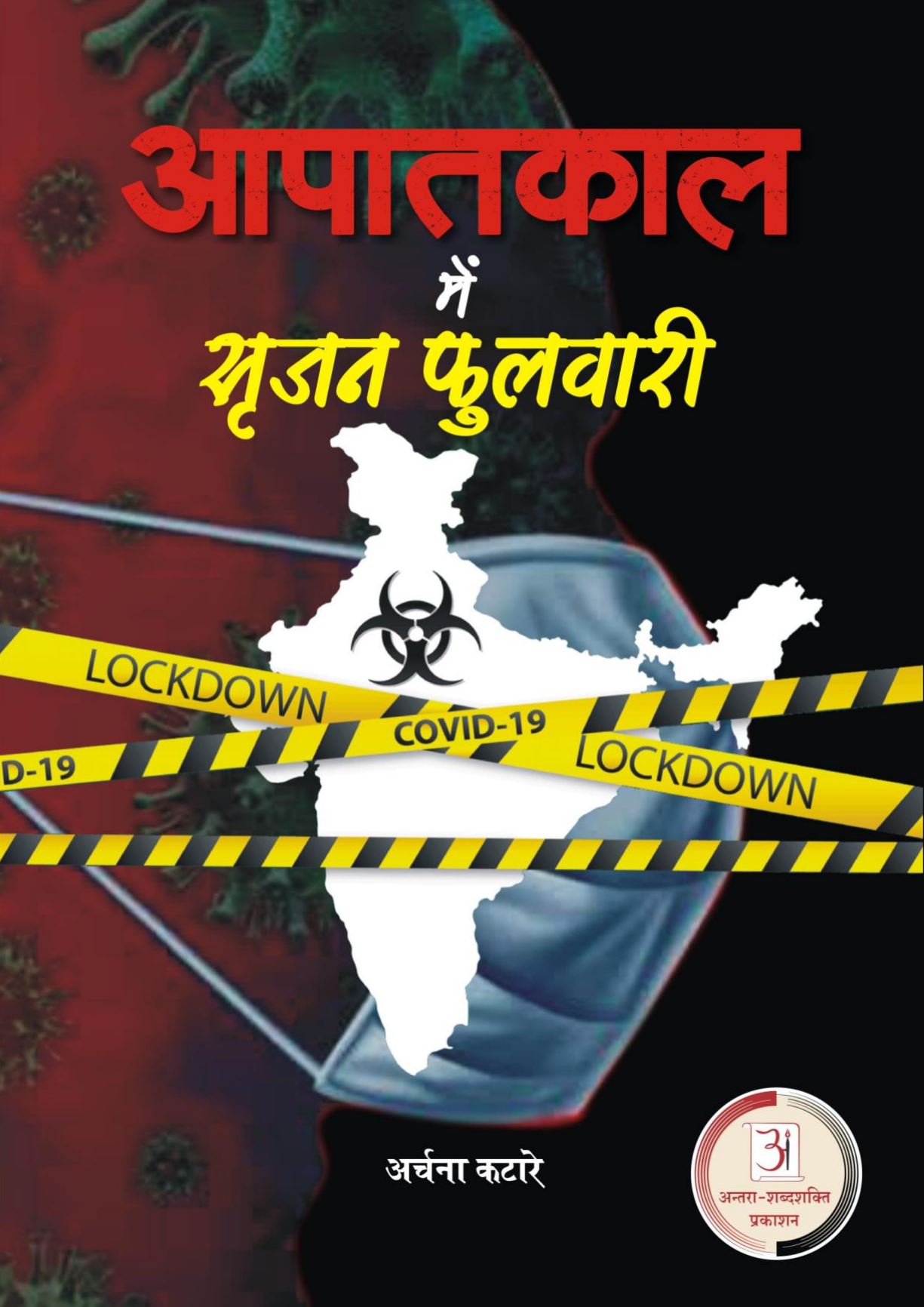

अर्चना कटारे

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

अर्चना कटारे

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-137-4
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, **अर्चना कटारे**
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY ARCHANA KATARE
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	मजदूर की लाडो	6
2.	पतंग	7
3.	आयी बरखा रानी	8
4.	करनी के फल	9
5.	जवानों को श्रद्धांजलि	10
6.	डर के आगे जीत	11
7.	मुसीबत	12
8.	रोटियां	13
9.	मेरा तिरंगा	14
10.	बस इतना मांगतीं हूँ	15
11.	घड़ी	16
12.	माँ बिन पीहर	17
13.	एक दिया जलाएं	18
14.	हिन्दी हमारी अमर रहे	19
15.	पत्ते की आत्मकथा	20-21

मजदूर की लाडो

ईट गिट्टी पत्थर ढोती, सिर पर रखकर अपने,
कडी दुपहरी सिर से गुजरे, फिर भी खाने को तरसे।

डामल से हाथ पैर मे छाले पड़ते, पर काम हाथ से न छूटते,
खाँसते-खाँसते दम भी निकले, पर सड़क बनाते रहते।

बडी अट्टालिका तानें और गगनचुम्बी इमारतें,
पहाडों पर भी मंदिर बनाये, इनकी मेहनत को कोई न आंके।

फावड़ा, गेंती, तसला, कुल्हाड़ी होते इनके गहने
सिर पर गुडरी उस पर तसला, माथे पसीना बहाते।

टूटी चप्पल, फटी ऐडी, फटी साडी, तार-तार गमछा होते,
आपनी लगन और मेहनत से मंजिल तय ये करते।

बिना योगा फिटनेस किये, तन सुडोल होते,
पेट की खातिर मीलों चलते, मेहनतकश ये होते।

कभी कभी झाड़ियों मे बच्चे पैदा होते, नाल पत्थर से काटती,
कमजोरी की हालत होती, फिर भी काम ये करती।

अमुआ की डाल पे मेरी लाडो, झूला झूले मेरी श्रम किशोरी,
अंक मे जब लाडो लेती, भूल जाती थकावट सारी।

प्याज संग रोटी खाती, आंचल ढक दूध पिलाती।
झुरकुटों की छाया नीचे, सो जाती हमारी बेटी।

पतंग

आज बेटा पढ़ लिख कर बोला
जब भी खेल रहे थे बुला लायी
कभी चैन से खेलने न दिया
जब भी गिर रहे थे गिरने न दिया
कभी धूल कपड़ों पर लगने न दिया
बैठा कर थमा देती थी मुझे पुस्तकें
बैग ढोते-ढोते बड़ा हो गया
पतंग जैसा कभी स्वच्छंद उड़ने न दिया

यह सुन माता बोली
पतंग भी स्वच्छंद कहाँ उड़ पाती है
उसकी डोर भी किसी के हाथ में होती है,
ज्यादा ढील दो लहराने लगती है
डोर हल्की खींच लो तो आसमान छूने लगती है।
धागे को भी चरखी मे लपेट कर रखते हैं
नहीं तो वो भी उलझ जाता है
गडारी मे पहले कागज लगाते है जिससे डोर फसती नहीं है,
गडारी में अगल बगल सहारे के लिये गोल खपच्ची होती है,
हाथों से धागे को चरखी के बाहर नहीं जाने देते
याद रखना पेंच काटने के लिये
शरु में मांझा लगाना पड़ता है
और चारों ओर की पतंग देखकर
किससे पेंच लडाना है वो भी देखना पड़ता है
कट जाने पर दुखी भी होना पड़ता है
माना पतंग को फटना ही है या कटना ही है
पर जब आपने हाथों मे हैं... सम्भालना ही है!

पतंग सी जिन्दगी देख बेटा समझ गया
अपनी शिकायत छोड़ पैरों पर गिर गया
बेटा धन्य हो माँ आज तूने
मेरे मन का बोझ उतार दिया
जिन्दगी का पन्ना अनुभव से खोल दिया।

बरखा रानी

काले काले बदरा लेकर आयी बारिश सुहानी,
गर्मी से भी राहत देने आयी बरखा रानी।

टिप-टिप बूंदें लगती प्यारी, छप-छप करती बिटिया रानी,
छाता लेकर अंगना जाती, भीग जाती गुड़िया रानी।

गरज गरज दामनी चमके, कड़के बिजली रानी,
बिजली आँख मिचौनी करती, दियासलाई ढूँढ रही नानी।

घुमड़-घुमड़ कर बदरा बोलें, कड़कड़ करती दामिनी,
अंधकार देख माँ से चिपके, डरती गुड़िया रानी।

थिरक-थिरक कर पंख फैलाकर, नाचे वन मायूरा
मानो मेघ का आलिंगन करने, झूमे आज मयूरा।

बहुत दिनों से प्यासी बैठी, आओ धरा की प्यास बुझाने।
आषाढ़-सावन का महीना आया, , पेड पौधे सब सूख रहे।

उफनती नदियां निकल चली हैं, अपने प्रियतम सागर से मिलने,
कोई न रोको, कोई न टोको, पकड़ो न मेरी बैंया।

सिंधु के आगोश में जा कर, अपने जीवन की प्यास बुझांऊँ।
बारिश इन छोटी छोटी बूँदों से, नदी बन सागर में मिल जाऊँ।

करनी के फल

दिनों दिंन अत्याचार देख प्रकृति भी उदास है,
तलाब, नदियाँ सूख रहीं वो भी मानो उदास है,
हरे भरे वृक्ष काट रहे, जल स्तर भी कम कर रहे,
पत्ते-कलियाँ झड़ रहीं, जीने की आस छोड़ रही,

कोयल, कौआ, नन्ही चिड़िया मूक से हो गये,
स्वछंद परिंदों के नीढ़ तक उजाड़ रहे,
गौ माता को बूचड़ खाना भेज रहे, इंसान खुद नरभक्षी हो रहे,
माँ बाप वृद्धा आश्रम भेज कर, कुत्तों से मन बहला रहे,

नन्ही बेटियों को देवी न मान, हवस का शिकार बना रहे,
उच्च कुल के बेटे अवारा घूमें, शूद्र हर जगह राज कर रहे,
चारों तरफ अफरा-तफरी मची है, भगवान का नाम नहीं ले रहे,
देखो अपने संसार की हालत, ईश्वर भी बदला ले रहे,

भूकंप, बाढ़, तूफान और चक्रवात दे रहे,
ये प्रकृति आपदाएं नहीं हैं,
हमको अपनी करनी के फल मिल रहे,
इनके सबक याद रखो,

प्रदूषण हम इतना कर रहे कि ग्लेशियर भी पिघल रहे,
वो दिन दूर नहीं... कि जब हम जल समाधि ले रहे,
हम सभी दायरेमें रहें, नहीं तो परिणाम भुगतने को तैयार रहें,
अब भी कुछ नहीं बिगड़ा.. अब तो हम सचेत रहें।

जवानों को श्रद्धांजलि

चुन-चुन कर फूल ले आयी, हे! भारत माँ तुम्हें चढ़ाने को,
चारों ओर गद्दार खड़े हैं... हे! माँ तेरा सीना छलनी करने को।
मंदिर मस्जिद के विवाद पर दंगे खूब कराते हैं,
जनता को विवाद मे फंसाकर, आपस में ही लड़ाते हैं।

कश्मीर पर बैठे सिपाही, रोज ही अपमानित होते हैं,
अपने ही देश की खातिर, आतंकियों से पत्थर तक खाते हैं।
चालीस जवान एक साथ शहीद होते, आँखों में खून उतारते हैं,
हाथों मे बन्दूक होते हुऐ भी, कर कुछ भी न पाते हैं।

लाशों के चिथड़े बटोरकर, घर-घर पहुँचाने जाते हैं,
चार दिन शहादत की बातें होती, फिर ठंडे पड़ जाते हैं।
भाषणबाजी बहुत ही होती, फोटो भी खिचाते हैं,
थोडा बहुत अश्ववासन देकर, दुबारा कभी न आते हैं।

जिनके बेटा, पति भाई, पिता गये, वही दुख जान पाते हैं,
सीमा पर बैठे वीर सिपाही, हम तुमको शत-शत नमन करते हैं।
काश! भारत में भी दिन ये आ जायें, फूल बरसें सेना के हर जवानों पर,
हम पर मर मिटने वालों का, सम्मान हो हर गली चौराहे पर।

डर के आगे जीत

उड़ रही हूँ खुले गगन में, मुझे अब उड़ने दो।
कोई न रोको-टोको, मुझको आगे बढ़ने दो।

अरमानों का समंदर है, जज्बात मेरे अंदर है
तूफानों से लड़ने की ताकत मेरे अंदर है।

ऊर्जावान हूँ मैं, शक्तिशाली हूँ मैं
निष्ठावान हूँ मैं, रोजाना सैर करतीं हूँ मैं।

पर डरतीं हूँ अंदर से मैं, कोई आकर छेड़े न,
रास्ता मेरा रोकें न, जला न डालें मुझको भी।

जी लेने दो मुझको भी, दुनिया अभी न देखी जी,
पता नहीं कब दरिन्दा मिल जाये, लूट ले जाये अस्मत भी।

डर बैठा है अंदर से, कैसे निकले ये मन से,
जमाना खराब है सुन-सुन के, भय नहीं निकल रहा मन से।

डर लगता है सन्नाटे से, डर लगता है रात्रि के अंधेरे से,
डर लगता है मर्दों से, नहीं डर जंगल में जानवरों से।

क्योंकि जानवरों से गये बीते हो रहे हैं मर्द
भूखे भेडिया सा देखें औरत को, समझ न आए इनका मर्ज।

हाँ सच है.....
एक कांड दब नहीं पाता, दूसरा हो जाता है।
संकट का जीवन है बेटियों का, हादसों से डर लगने लगता।

कब तक डर डर कर बैठे, कब तक छुप छुप कर बैठे,
डर के आगे जीत ही होती मुझे अंबर में विचरने दो।

मुसीबत

सूनी गलियां, सूनी राहें, सूने हैं चौराहे,
कैसा संकट आन पड़ा है देखो हमारे द्वारे।

सूनी माँ की मंडिया देखो, सूने मंदिर और दिवाले,
चल रही है कोरोना की चैन लम्बी, समय रहते तोड़ो ना।

अपने अपने घरों में बैठो, सुरक्षित चैन से रहो ना,
कर लिये जो अनजाने पाप हैं हमने, उनका प्रायश्चित है करो ना।

हैं सभी देवालय बंद, प्रेम की ज्योति जलाओ ना,
कुछ समय अपने लिये निकालो, समय का सदुपयोग करो ना।

कट जायेंगे संकट के बादल, कुछ ईश्वरीय प्रकोप है यह,
हम सभी की दुआएं करें, प्रभु यह मुसीबत हरो ना।

हर समय एक सा नहीं रहता, कुछ धैर्य रखो ना।
हट जायेंगे संकट के बादल, नियमों का पालन करो ना।

रोटियां

रोज नया खेल दिखातीं है रोटियां,
कभी भूखों को चोर बनातीं है
कभी लडाई झगड़े करातीं हैं रोटियां
कभी माँ का प्यार भी बरसाती हैं रोटियां

कभी न खाने पर मार भी खिलाती है
कभी मस्कत भी कराती है रोटियां
कभी झूठ भी बुलवाती है रोटियां
कभी जुल्म भी कराती है रोटियां

कभी जान भी बचाती है रोटियां
बहुत मेहनत से मिलती हैं रोटियां
कभी फुल्के कभी चपाती
कभी कहलातीं हैं रोटियां

किस्मत से मिलती है मुफ्त की रोटियां
बहुत मेहनत से उपजती हैं रोटियां
एक एक निवाले का आदर करो
हमारी बहुत बड़ी ताकत है रोटियां

नींद भी अच्छी आती है जब पेट में रोटियां
कभी तिरस्कार न करो, जब मिल रही हों रोटियां
मक्के,ज्वार, बाजरे की गुड़ संग मजा देती है रोटियां
ठंड मे सेहत से भी हैं भरपूर हैं ये रोटियां!

मेरा तिरंगा

लहर-लहर लहराये तिरंगा, जग में इसका मान बढ़ाओ,
राग द्वेष को दूर भगाकर, प्रेम शाँति का पाठ पढ़ाओ।

जात पात में क्यों उलझे हो, आपस में ही क्यों लड़ते हो,
एक है धरती एक आसमां, एक है सूरज-चंदा।

सब धर्मों का मर्म एक है, प्रेम का पाठ पढ़ते जाओ,
धर्म जाति का भेद न लाकर, एकता की मिशाल बन जाओ।

एक तिरंगे के नीचे होकर, हम सब नत मस्तक हो जायें,
हर जन जन के मन में, जन गण मन भा जाये।

रहे अखंड भारत में सुख समृद्धि, हरित क्रांति फिर छा जाये,
वीर शहीदों के वतन पर, फिर कोई आंख न दिखाने पाये।

अखंड भारत का सपना था जो फिर खंड-खंड न हो जाये,
इसको खंडित करने की जो सोचे, उसको दंडित करते जायें।

इस तिरंगे पर मिट जाना, कोई आंच न आने देना,
लहर-लहर लहराते तिरंगे को कोई दूश्मन छूने न पाये।

अगर माटी कर्ज चुकाने, कोई संकट आ जाये,
प्राणों की आहुति देने में, कोई कभी भी न घबराये।

वन्दे मातरम कहते-कहते, प्राणों को न्योछावर कर जायें,
इस माटी का तिलक लगाकर, जयहिन्द का नारा गाते जायें।

कसम है उन वीरों और शहीदों की, कसम है भारत माता की,
हंसते-हंसते मर जायेंगे, सिर न भारती का झुकने देंगे।

बस इतना मांगतीं हूँ

मेरी पूजा हिन्दुस्तान, मेरा धर्म हिन्दुस्तान,
मेरा देश रहे महान, बस इतना मांगती हूँ...।

मेरे झंडे की रहे ऊँची शान, इस पर तन मन है कुर्बान,
इसकी छटा बिखेरे ज्ञान, बस इतना मांगती हूँ....।

सब धर्मों की रहे आन, सभी का मर्म एक समान,
सभी में हो प्रेम समान, बस इतना मांगती हूं....।

राजनीति के दांव पेंच में, ऊँच नीच के भेद भाव में,
हर कोई न रहे परेशान, बस इतना मांगती हूँ...।

न आतंकी हमला हो, न ही कोई दंगा हो,
होवे राष्ट्र का गान, बस इतना मांगती हूँ,...।

न ही भारत के टुकड़े हों, न ही खून से लथपथ चिथड़े हों,
रहे अमन शान्ति का ध्यान, बस इतना मांगती हूँ...।

हर नारी का रहे स्वाभिमान, जिन पर करें हम अभिमान,
उनका होता रहे उत्थान, बस इतना मांगती हूँ...।

न सूखा न पाला हो, खेतों में हीरा सोना हो,
किसान न दुखियारा हो, बस इतना मांगतीं हूँ...।

चारो ओर हरियाली हो, कोयल गौरैयों की कूकें हो,
नयी नयी पेडों की कोपल हों, बस इतना मांगतीं हूँ...।

बड़े बूढों कि सम्मान हो, भूखा न कोई इंसान हो,
बेबस न कोई लाचार हो, बस इतना मांगतीं हूँ...।

हिमालय की अपनी शान रहे, समुद्रों की अपनी आन रहे,
जंगलो में अपनी जान रहे,बस इतना मांगतीं हूँ...।

अमन शाँति के वातावरण में मेरा हिंदुस्तान रहे।
न कोई बम के धमाके हों, बस इतना मांगती हूँ।

घड़ी

हर घड़ी देखो घड़ी, सांसो की घड़ी घट रही है

न मिलेगा समय किसी को, हर घड़ी बीत रही,
जो घड़ी बीत गयी, वह न आयेगी कभी।

घड़ी की सुईयों जैसा, समय चक्र चल रहा अभी,
सुईयाँ निरन्तर चलती रहेंगी, समय कभी रुकेगा नहीं।

टिक टिक जैसा, दिल धक धक कर रहा
सांसों की डोर से मन मतवाला हो रहा।

भूल रहे हम सभी, मदहोश सभी हो रहे,
होता खेल सांसो का, बंद भी होती है घड़ी।

थी वह शुभ घड़ी जब हम पैदा हुऐ,
माँ की गोद में घड़ी भर चैन से सो लिए।

बढ़ रहे थे हम भूल कर सभी,
घट रही थी उम्र की वह घड़ी।

फिर न आयी घड़ी चैन की निरन्तर सब चल रहे,
आयी जब विदा की घड़ी, तब फिर चैन से सो रहे।

धूं धूं होकर जल रहे, रूधें गले बिदा कर रहे
दो घड़ी सभी रूके, फिर छोड़कर चल दिये।

आये थे दो दिन बाद, कुछ शेष छोड़ गये
कुछ साथ ले गये, मिल थे दो घड़ी।

फिर जल में विसर्जित गये, शुद्ध सभी हो गये,
दिन महीने साल बीते, सब कुछ ही भूल गये।

घड़ी-घड़ी ध्यान करने वाले, घड़ी के बगल में टंग गये,
हार मालाओं से सुसज्जित दूर से ही निहार रहे।

माँ बिन पीहर

बहुत दिन बाद पीहर गयी, पर माँ बिना वो बात नहीं थी
सब कुछ पहले जैसा था, पर माँ की आहट नहीं थी।

पूरा घर आव भगत मैं था, पर वो माँ की डाँट नहीं थी
भैया भाभी पलकों पर बिठाये, पर आखों से आँसूओं की बरसात थी।

गाय बैल रंभा रहे थे, ममता की बरसात नहीं थी
सुबह वही थी शाम वही थी, माँ बिना वो रात नहीं थी।

छप्पन व्यंजन खूब बने थे, माँ के हाथ की खुशबू नहीं थी
गाड़ी बंगला बहुत खड़े थे, माँ की पतिक्षा वाली बात नहीं थी।

हाल चाल सब पूछ रहे थे, मन जानने वाली बात नहीं थी
घर की चार दीवारों के बीच, अपनी सी कोई दीवार नहीं थी।

घर पर खूब चहल पहल थी, पर चौखट कोई आहट नहीं थी
गली गलियारे खूब सजे थे, तुलसी पर रांगोली नहीं थी।

रंग बिरंगे मंहगे कपडे सूखें, पर माँ की सूती साडी नहीं थी
बहुत दिन बाद बाद पीहर गयी, पर माँ बिना वो बात नहीं थी।

एक दिया जलाएं

आओ हम सब भारतीय एक हो जायें, अंधकार को दूर भगायें।
सारी दुनियां में मिशाल बना जायें, बस एक दिया जलाएं।

फैल रहा है चंहूं ओर अंधियारा, डर हुआ घबराया-घबराया।
आशा की कोई किरण न दिखाये, तब एक हम दिया जलाएं।

जब अखिल विश्व में संकट गहराया हो, जब कोई न आस मिले।
मन से संकल्पित हो कर, आओ हम एक दिया जलायें।

नफ़रत की हर दीवार मिंटायें, जातपात का भेद न लायें।
देश की हर विपदा को हर जायें, आओ हम एक दिया जलाएं।

आओ हम आव्हान कर जायें, संक्रमण को दूर भगायें।
अपनी पुरातन संस्कृति आपनायें, आओ एक दिया जलाएं।

कितना सुखद वातावरण होगा, दीपमालाओं के हार पहनेगा।
सारा भारत एकजुट होगा, आओ हम एक दिया जलाएं।

भारत माता जगमग होंगी, देखकर अपने भारत को खुश होंगी।
हम मिलकर साक्षी बन जायें, आओ एक दिया जलाएं।

सूना न रहे कोई घर आंगन, हर घर रोशन हो जाये।
हर घर दिवाली सा जगमग हो जाये, आओ एक दिया जलाएं।

हिन्दी हमारी अमर रहे

उत्तर से दक्षिण तक...पूरब से पश्चिम तक...!
हिन्दी गुंजायमान रहे, हिन्दी का सम्मान करें।

जातपात का भेद मिटाती, प्रेम भाव और मान बढ़ाती।
हिन्दी बोली प्यारी है, हिन्दी सबसे न्यारी है।

आओ सभी को साक्षर करायें, हिन्दी में हस्ताक्षर करायें
जन जन तक ये बात पहुचायें हिन्दी से भारत माँ की मांग सजाये।

अंग्रेजी भाषा ने बेड़ी बांधी, हम बोलने पर मजबूर हुए
अंग्रेज तो चले गये, पर अंग्रेजी छोड़ गये।

आओ इन बंधन को काटे, अब न हम मजबूर हुऐ
क्यों किसी की हुकूमत माने, हम तो आजाद विचर रहे।

हम अपने भारत पर उपकार करे, हिन्दी का विकास करे
आओ लम्बी चैन बनायें, हिन्दी का मान बढायें।

हर दिशा से हर फिंजा से, महके केशर की क्यारी,
हर बच्चा-बच्चा बोले हिन्दी की ही वाणी।

पूरे भारत में राज करे, हमारी मातृभाषा रहे
हिन्दी जन-जन पर राज करे, हिन्दी हमारी अमर रहे।

पत्ते की आत्मकथा

परिवर्तन
आज प्रकृति का पत्ता-पत्ता
परिवर्तन को स्वीकार रहा।

झड़कर सूखकर डाली से गिर रहा
कभी पक्षी चहका करते थे
कभी करते थे रैन बसेरा।

कभी साथ रहकर हवाओं संग डोल रहा था
राहगीरों को ठंडी शीतल हवाओं से
विश्राम भी दिया करता था।

आज साथ छूटा अपनों का सूखकर चरमरा गया
उड़ गया कहीं दूर, अपनों से बिछड़ गया
मिल न सका दुबारा न जाने कब गिर गया।

सोच रहा कितना सुख था अपनों के साथ
हिल मिल साथ रहते थे
बहुत सुखी था जब फल भी लदे रहते थे।

आज गिरकर, छूटकर, बिछड़ कर
अकेले रौंदा जा रहा हूं पैरों तले
नष्ट होते अपने अस्तित्व को दुखी भी हूं।

पर.... आस है, विश्वास है
फिर से लौटूंगा वापस अपनों के पास
नये-नये कोमल कोमल पत्तों के संग।

क्योंकि...
परिवर्तन जीवन का अटल सत्य है
जो आया है, वो जायेगा, यही जीवन का सत्य है।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

अर्चना कटारे

शहडोल (म.प्र.)

Email- archanakatare10@gmail.com

Mobile - 7999845204

लिखने का शौक तो था पर पंख दिये अंतरा ने आज मैं इतना आगे बढ़ पायी तो अंतरा शब्दशक्ति से इसने मुझे पहचान दी मेरी किताबों का विमोचन किया और सम्मान दिये जिसकी मैं आभारी हूँ।

मै हमेशा शब्दों के माध्यम से कविताओं के माध्यम से समाज को नयी दिशा देना चाहती हूं, देश प्रगति करे, हर बच्चा उन्नति के पथ पर चले कहीं गरीबी न रहे, सभी बच्चे संस्कार वान हों क्योंकि कल का भविष्य इन्हीं पर निर्भर है।

मुझे प्रकृति और पर्यावरण से बहुत प्यार है। लोगों का ध्यान इस ओर आकर्षित करने का प्रयास भी करती हूं। सभी देश वासियों में हिन्दुत्व की भावना का विकास हो, सभी हिन्दी का सम्मान करें। मेरा भारत निरन्तर बुलंदियों को छुऐ, हर सैनिकों का सम्मान हो। बेटियां सुरक्षित रहें, उन्हें कोई आंख उठाकर भी न देखें यही मेरी भगवान से भी प्रार्थना रहती है।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-137-4

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/